India ECHOES
ONE WORLD ONE HUMANITY

श्री राम चंद्र मिशन®

चेन्नई

भारतीय छात्रवृत्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम (१६–२४ अप्रैल)

मालिक ने भारतीय छात्रवृति प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन और समापन सत्रों में भाग लिया और दोनो सत्रों में भाषण दिया। उद्घाटन सत्र के भाषण में मालिक ने कहा, "सहज मार्ग में शिक्षा का महत्वपूर्ण तत्व प्राणाहुति है। विश्वास करें, प्राणाहुति प्रशिक्षण की एक प्रक्रिया है, यह हमें प्राण, "प्राणस्य प्राणः" देने की प्रक्रिया है। यह हमारे अंदर गुरु की कृपा और ऊर्जा संचारित करने की एक विधि भी है." समापन सत्र में उन्होंने जो दैनिक जीवन में हुम सुनते हैं, उसे ध्यान से सुनने और प्रयोग में लाने पर जोर दिया। मालिक ने सारी वार्ताएं सी. सी. टी. वी. के माध्यम से अपने कॉटेज में रहकर देखी।

बाबूजी का महासमाधि दिवस: १९ अप्रैल, २०११

मालिक सुबह जल्दी उठ गए और नाश्ते से पहले प्रशिक्षकों को सिटिंग देने और अपने ई–मेल चेक करने में व्यस्त रहे। उनका सुबह का सत्संग संचालित करने का कोई इरादा नहीं था, मगर आश्रम में अफ़वाह फैल गयी कि मालिक सत्संग संचालित करेंगे। जब मालिक ने यह खबर सुनी, तब उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ मगर उन्होंने सत्संग संचालित करने का निर्णय लिया। उन्होंने ध्यान– कक्ष में प्रवेश किया और चूँकि फूल मालांए तैयार नही थी, उन्होंने उनके आने तक इंतज़ार किया। लगभग १५ मिनट तक मालिक ने सीढियों के पास बैठ कर प्रतिक्षा की और सिर्फ जब फूलमालएं आई, वे उपर चढ़े। लालाजी और बाबूजी की तसवीरों पर मालाएं चढ़ाई और फिर सत्संग संचालित किया।

बाबूजी महाराज का जन्मोत्सव

२९ अप्रेल से १ मई के बीच एक तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया और तीनों दिन के सत्संग सुबह ७:३० और शाम के ५ बजे के लिये घोषित किये गये। लगभग ५००० अभ्यासियों ने उत्सव में भाग लिया और मालिक ने तीनों दिनों के सुबह के सत्संग संचालित किये। हर सत्संग लगभग एक घँटा पन्द्रह मिनट तक चला और १ मई सवेरे का सत्संग लगभग एक घँटा पच्चीस मिनट तक चला।

३० अप्रैल के शुभ दिन पर मालिक ने ८ शादियाँ करायी। २ बहनों ने भजन गाये। मालिक ने कई पुस्तके और आडियो–वीडियो सीडी का विमोचन किया। उनके पोते भार्गव ने मालिक की कुछ तस्वीरों के सीमित संस्करण की बुकिंग की घोषण की जोकि २४ जुलाई को वितरित किये जायेंगे। मालिक इन तस्वीरों की प्रदर्शनी देखने के लिये गझीबो गये। हल्की बूँदा–बाँदी ने मालिक का आश्रम भ्रमण के दौरान साथ दिया।

शाम ६.३० बजे हैदराबाद के अभ्यासियों ने एक सुन्दर नाटक प्रस्तुत किया। इस नाटक के माध्यम से दर्शाया गया कि खोज करने वाले को राह में कैसे विकल्प चुनने पड़ते हैं। कैसे शंका, पूर्वाग्रह, क्रोध भय और आलस्य मार्ग में बाधा बनते है और कैसे श्रद्धा ,प्रेम ,संयम ,अनुशासन और इच्छा शक्ति जैसे उच्च गुणों से उनपर विजय प्राप्त होती है। ध्यान कक्ष के आध्यात्मिकता से संतृप्त वातावरण में कलाकारों ने अच्छा प्रदर्शन किया और सबके दिल जीत लिये। बाद में मालिक सारे प्रतिभागियों से कॉटेज में मिलें। १ मई की शाम को चेन्नई केंद्र के युवाओं ने बुद्ध के जीवन पर एक नाटक प्रस्तुत किया। मालिक ने इस कार्यक्रम को भी सी.सी.टी.वी के माध्यम से देखा।

इस तीन दिवसीय कार्यक्रम का समापन १ मई की शाम को हुआ लेकिन मालिक द्वारा किया गया आध्यात्मिक कार्य निश्चित ही हमारे हृदयों में रहेगा और विकसित होगा। मालिक गायत्री सिर्फ एक दिन के लिये गये और ३ मई को बेंगलोर के लिये सड़क से रवाना हुये।

अडिज़ेस सेमिनार

बेंगलोर, ३–१४ मई २०११

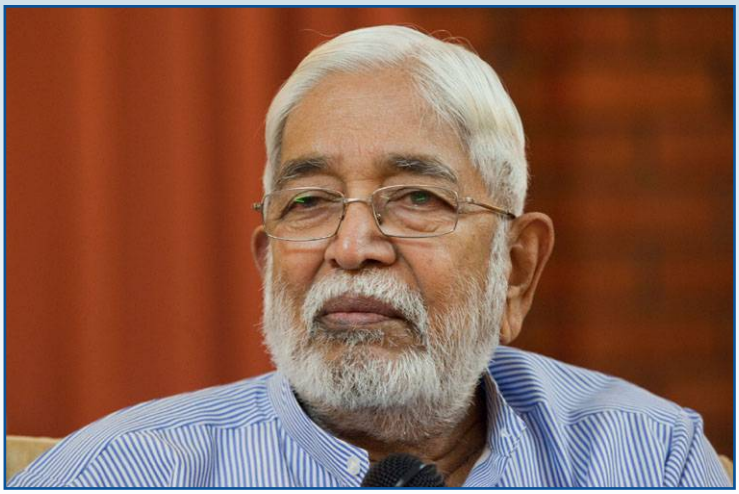

पिछले तीस बरसों में मिशन का बहुत तेजी से (दिन दुगुना और रात चौगुना) विकास हुआ है। मालिक ने मिशन के संगठन की रूपरेखा के संशोधन की पहल की जिससे इनकी प्रभावी जनसेवा जारी रहे, और साथ ही सहज मार्ग शिक्षा और साधना की मूल पवित्रता भी बनी रहे।

मालिक ने डॉ इचाक अडिज़ेस, जोकि विश्व के प्रमुख प्रबंधन विचारकों में से एक हैं, को संगठन की नयी रूपरेखा के पुनः निर्माण करने का कार्य सौंपा। इस कार्य के लिये सहज मार्ग की विभिन्नता दर्शाने वाले २५ अभ्यासियों के समूह को चुना गया, जिन्होंने डॉ इचाक अडिज़ेस और मालिक के मार्ग दर्शन मे परम धाम में गहन विचार विमर्श किया।

डॉ इचाक अडिज़ेस की कार्य प्रणाली के अनुकूल और प्रासंगिक प्रयोग से श्री राम चन्द्र मिशन तथा उससे संबन्धित / जुडे संगठनों के भविष्य की रूपरेखा रची गयी। नये संगठन की रचना का उद्देश्य है :

- अभ्यासियों को दी जा रही आध्यात्मिक्ता सहायता को प्रबल किया जाए।
- संगठनों मे सेवा और सहायता की भावना बनायी रखी जाए।
- एक अखंड संगठन की रचना हो जोकि आध्यात्मिक उद्देश्य मे बाधा ना डाले और अंततः
- मालिक पर बढ़ते प्रशासनिक बोझ को कम किया जाये।

विचार विमर्श के तीन महत्वपूर्ण परिणाम हैं:

संगठनों की रूपरेखा की पुनर्रचना जो सहज मार्ग को भविष्य में आगे ले जा सके और एक विश्वस्तरीय सेवा समिति का चयन जो मालिक को उसके मिशन के निर्वाहन मे सहायता करे।

सहज मार्ग सेवा के नियम पत्र, प्रतिज्ञा पत्र और अनुबंध की रचना, जिसमें इन विचार विमर्शों का सार सम्मिलित है, पर मालिक तथा सारे प्रतिभागियों ने हस्ताक्षर किये।

प्रेम और सेवा के लिये पुनह प्रतिबद्धिता। मालिक ने कहा, "प्रेम हमारा जाप है, यह हमारी क्रिया है और यही हमारी प्रार्थना है। सेवा के बारे मे उन्होंने कहा", हमारा मोक्ष सिर्फ निस्वार्थ सेवा से सम्भव है"।

मालिक के मार्ग दर्शन और निर्देशन में यह समिति मिशन और उससे जुडे संगठनों के विश्वव्यापी कार्य और संचालन के लिये जिम्मेदार रहेगी।

बेंगलोर

मालिक नाट्रमपल्लि से लगभग दोपहर के २:१५ बजे निकले और क्रेस्ट, बेंगलोर लगभग ४:०० बजे पहुँचे। उन्होंने प्रसाद बांटा और थोडी देर के लिये आराम किया। इसके बाद उन्होंने अपनी गोल्फ कार्ट से नये शैक्षिक ब्लॉक के निर्माण कार्य का मुआइना (निरिक्षण) किया तथा इसके बाद उन्होंने सत्संग संचालित किया।

अगली सुबह के सत्संग के बाद वे अपनी गोल्फ कार्ट मे घूमने निकले और अभ्यासियों , जो रास्ते मे पंक्तिबद्ध खड़े थे, से रुक–रुक कर बात की। उन्होंने लगभग एक घंटे तक अभ्यासियों से बातचीत की। थोड़ी देर बाद वे शहर के लिये निकले। परम धाम मे उन्होंने ५ अप्रैल से शुरु हो रहे अडिज़ेस सेमिनार के लिये की गयी व्यवस्था का निरीक्षण किया। उन्होंने कार्य की सराहना की और वे कुल मिलाकर व्यवस्था से प्रसन्न थे।

विश्वस्तरीय सेवा समिति

पी आर कृष्णा	आध्यात्मिक कार्यक्रम विकास
संजय भाटिया	लालाजी मेमोरिअल शैक्षणिक संस्था के अध्यक्ष
संतोष श्रीनिवासन	आध्यात्मिक प्रशिक्षण व्यवस्था
रिषभ कोठारी	सदस्य सेवाएं
चक श्रीप्रसाद	निरंतर सुधार
राजेन्द्र सिंह राठौड़	भारत मे आध्यात्मिक सेवा
पौल एम जूल	पश्चिम मे आध्यात्मिक सेवा
नितिन गोविला	पूर्व मे आध्यात्मिक सेवा
विलिअम वेकॉट	अमेरिका मे आध्यात्मिक सेवा
एन एस नागराज	सी आई एस मे आध्यात्मिक सेवा
शरत हेगड़े	समुदाय विकास
सुधीर मारवाहा	विश्वस्तरीय अचल संपत्ति, सहायता
संतोष खांजी	विश्वस्तरीय कार्य प्रचालन, सहायता
कमलेश पटेल	लोकपाल/प्रशासनिक शिकायत जाँच अधिकारी

भाग ४, अंक ४ जुलै २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

ईरोड

मल्लमपुळा

तमिलनाडु में यात्रा

गुरुदेव १४ मई को बेंगलोर से कृष्णगिरि पहुँचे। वहाँ उन्होंने बेंगलोर और आसपास के केन्द्रों से आए हुए अभ्यासियों को सत्संग कराया। गुरुदेव प्रसन्नचित्त थे और उन्होंने सत्संग के बाद कुछ अभ्यासियों के साथ हल्का–फुल्का परिहास किया। बाद में वे ईरोड के लिये रवाना हुए।

गुरुदेव दोपहर १२ बजकर ३० मिनट पर ईरोड पहुँचे। यद्यपि वे यात्रा के बाद थके हुए थे फिर भी अभ्यासियों को देखकर प्रसन्न हुए। थोडी देर विश्राम करने के बाद दोपहर ४ बजे उन्होंने भोजन–कक्ष का उद्घाटन किया और वहाँ एकत्रित करीब १००० अभ्यासियों को सत्संग कराया। गुरुदेव ने अभ्यासियों के बच्चों को, जो इस वर्ष बारहवीं कक्षा की परीक्षा दे चुके हैं, सत्संग में भाग लेकर अभ्यास प्रारंभ करने की अनुमति दी। बाद में उन्होंने केन्द्रों के प्रभारी गण और प्रशिक्षकों के साथ आश्रम के विकास के बारे में विचार–विमर्श किया। तत्पश्चात ईरोड से वाहनों का काफिला तिरुप्पूर डी जे पार्क के लिए रवाना हुआ और शाम को लगभग ६ बजे वहाँ जा पहुँचा।

बच्चों के लिये शिक्षा ऐसे है जैसे एक बढ़ते हुए पौधे के लिये पानी।

ये धूप–विवेक है जोकि पौधे को उसके पूर्ण विकास तक ले जाता है ताकि यह पूरी तरह से खिल सके और अपनी खूशबू फैला सके।

प्रेम वह सूर्य है।

१५ की सुबह को गुरुदेव ने २४ जुलाई के जन्म दिवस समारोह के लिए बनाए गए अस्थाई ध्यान–कक्ष का उद्घाटन किया। सुबह ६ बजकर ४० मिनट पर उन्होंने नवनिर्मित विश्राम–कक्ष का उदघाटन किया। वे इस विशाल भवन में चलकर गए और उद्घाटन हेतु रखे गए बाबूजी के पृष्ठचित्र की सराहना की। बाद में उन्होंने सबको सत्संग के लिए पहले से ही तैयार रहने की बात को फिर से याद कराते हुए सत्संग कराया। तत्पश्चात उन्होंने विश्राम–गृह का नाम रखा– 'अमैति–निलयम'(शान्ति का निवास)। इस अवसर पर केरल से आए लगभग ६०० अभ्यासियों सहित ३००० से भी अधिक अभ्यासी उपस्थित थे।

बाद में कुछ विश्राम के पश्चात आसपास के केन्द्रों में अपने दौरे की योजना बनाते हुए वे अति प्रसन्न मुद्रा में नज़र आए। उन्होंने लालाजी मेमोरियल ओमेगा इन्टरनेशनल स्कूल,चेन्नई से उत्तीर्ण होकर निकलने वाले बच्चों के लिए प्रकाशित होने वाली स्मरण–पत्रिका के लिए सन्देश लिखा। गुरुदेव खुले दिल वाले दाता की मुद्रा में थे और उन्हें इस उम्र में भी अपनी सेहत तथा व्यक्तिगत ज़रूरतों की परवाह न करते हुए ,पूर्ण प्रेम तथा निःस्वार्थ भाव से काम करते हुए और लोगों के साथ बातचीत करते हुए देखना सचमुच मन्त्र–मुग्ध कर देने वाला था।

शाम को गुरुदेव डी जे पार्क के चारों ओर जुलाई के उत्सव–समारोह की तैयारी के लिए चल रहे काम को देखने गए। उन्होंने 'आराम–डॉर्म' देखा और उस जगह को भी देखा जहाँ नया चिकित्सालय बनाया जाने वाला है। चिकित्सालय की योजना मालिक को दिखायी गयी और उन्होंने खुशी से 'इसे मेरे पास रहने दो' कहते हुए ले लिया। शाम ५.३० बजे उन्होंने वहाँ उपस्थित अभ्यासियों को, जो कि वहाँ पिछले ३० मिनट से ज़्यादा समय से शान्ति से अत्यन्त गहन व तन्मयता भरे माहौल में इन्तज़ार कर रहे थे, सत्संग कराया।

१६ तारीख को सुबह ७ बजे गुरुदेव मल्लमपुळा रिट्रीट सेन्टर की ओर रवाना हुए। वहाँ उन्होंने कुटीर उपगृह का उद्घाटन किया,जलपान किया,अभ्यासियों के साथ लंबी चर्चा की और बाद में इन्तज़ार कर रहे लगभग ५०० अभ्यासियों के समूह को सत्संग कराया। दोपहर १२ बजकर ४५ मिनट पर वे कोयम्बतूर के लिए रवाना हुए।

गुरुदेव नाचिपाळयम आश्रम पहुँचे, वहाँ देर से भोजन किया और थोड़ी देर विश्राम किया। दोपहर ४ बजे वहाँ एकत्रित लगभग ६०० अभ्यासियों को सत्संग कराने के बाद गुरुदेव करीब ८ बजकर ३० मिनट पर तिरुप्पूर डी. जे. पार्क वापस आ पहुँचे।

१७ तारीख दोपहर, गुरुदेव तिरुपुर से लगभग ३० कि.मी. पर स्थित कांगेयम गये। इस छोटे से आश्रम मे प्रेम से भरे हुए बहुत सारे हृदय उपस्थित थे जब

तिरुप्पूर

कांगेयम

भाग ४, अंक ४ जुलै २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

दिन्डीगल

त्रिचि

गुरुदेव ने कॉटेज और नये ध्यान कक्ष का उद्घाटन किया। गुरुदेव के द्वारा स्थान ग्रहण करने के बाद अभ्यासियों ने कक्ष में प्रवेश किया। सारी एकत्रित सभा बहुत ही शान्त थी और मालिक ने अभ्यासियों से तमिल में पूछा, "इन्द अमैतिक्कु एन्न कारणमो?" (ऐसी शान्ति का कारण क्या है?) कुछ क्षणों के बाद मालिक ने खुद ज़वाब दिया, "कोंजम मुन्नेत्रम आगी इरुक्कुदेन्नु अर्थम" (इसका अर्थ है,कुछ प्रगति हुई है)। शाम ४.३० बजे गुरुदेव ने उपस्थित १७०० अभ्यासियों को सत्संग कराया और फिर शाम को ६:३० बजे तक डी जे पार्क लौट आए।

१८ तारीख को सवेरे गुरुदेव डी जे पार्क से निकलकर ८:३० बजे दिन्डीगल आश्रम पहुँचे। उन्होंने ध्यान-कक्ष का उद्घाटन किया और आश्रम को नाम दिया, 'दया आश्रम'। जलपान के बाद इस उद्घाटन समारोह में उपस्थित २५० अभ्यासियों को सत्संग कराया।

गुरुदेव दिन्डीगल से सुबह के ११ बजे त्रिचि के लिए निकले तथा जैसे ही गुरुदेव की कार चलना शुरू हुई, एक अभ्यासी ने गुरुदेव को याद दिलाया कि उन्हे सीट-बेल्ट बाँध लेनी चाहिये। गुरुदेव ने मजाकिया लहजे मे कहा कि, "आपके चेहरे देखने के बाद, मै सीट-बेल्ट बाँधना भूल गया"। गुरुदेव के शब्दों से अभ्यसियों मे खुशी और हल्केपन की लहर दौड़ गयी।

चहल-पहल भरी यात्रा करते हुए गुरुदेव दोपहर के एक बजे त्रिचि पहुँचे, उन्होंने आराम करने और प्रशासनिक कार्य करने मे समय बिताया। शाम को कभी-कभी उन्होंने खुली हवा मे फिल्म देखी। रविवार को वे सत्संग कराने के लिये आश्रम गये। एक अभ्यासी अपने साथ घटी घटना के बारे मे बता रहा था कि कितने चमत्कारिक ढंग से उसकी प्रार्थना का ज़बाव मिला था। गुरुदेव ने कहा," यह बात मायने नही रखती कि कौन प्रार्थना करता है बल्कि यह बात मायने रखती है कि प्रार्थना कितनी ईमानदारी के साथ की जाती है। बच्चों ने सत्संग के बाद एक छोटा कार्यक्रम प्रस्तुत किया। गुरुदेव ने २३वीं तारीख को सुबह ११ बजे के विमान से चेन्नै के लिये प्रस्थान किया।

ओमेगा से आए बच्चों के साथ सतखोल में

गुरुदेव २७ मई को दिल्ली पहुँचे। लालाजी मेमोरियल ओमेगा इन्टरनेशनल स्कूल से बारहवीं कक्षा से उत्तीर्ण होने वाले प्रथम बैच गुट के विद्यार्थियों को गुरुदेव के साथ सतखोल-यात्रा का अवसर प्राप्त हुआ। इस यात्रा के लिए तैयार सभी विद्यार्थी २८ मई को आर.के.पुरम आश्रम पहुँचे। गुरुदेव दिल्ली के प्रस्तावित आश्रम की जमीन भी देखने गये।

दूसरे दिन रविवार को विद्यार्थी गुड़गाँव आश्रम में गुरुदेव द्वारा संचालित सत्संग में उपस्थित हुए। सत्संग के बाद अभ्यासियों ने विद्यार्थियों को एक छोटी डायरी तथा एक कलम स्नेह-उपहार के रूप मे दिया। बाद में शाम को मालिक अप्रत्याशित रूप से विद्यार्थियों से मिलने गए और उन्हें सत्संग कराया।

सोमवार,३० मई को गुरुदेव ने करीब ७ बजे सुबह मुरादाबाद की ओर प्रस्थान किया और सुबह ११ बजे वहाँ पहुँचे। कुछ देरी के कारण विद्यार्थी उनके बाद मुरादाबाद पहुँचे। मालिक उनके आने की आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही विद्यार्थी आ पहुँचे, मालिक अपने कमरे से बाहर आए और उनका स्वागत किया। उसके बाद ही उन्होंने भोजन और विश्राम किया।

दोपहर लगभग ३ बजे गुरुदेव ने रुद्रपुर के लिए प्रस्थान किया और शाम के ६:४५ बजे वहाँ पहुँचे। उन्होंने अगले दिन सुबह ९ बजे सिटिंग दी। उन्होंने विद्यार्थियों के साथ बाड़े में जहाँ भोजन परोसा जा रहा था, भोजन करने का निर्णय लिया और कुछ समय उनके साथ बातचीत में बिताया। एक भाई ने पूछा कि भौतिक काम और आध्यात्मिक काम में कैसे भेद किया जाए। गुरुदेव ने उत्तर दिया कि काम काम है। उसे भौतिक और आध्यात्मिक वर्ग में अलग-अलग बाँटा नहीं जा सकता। जैसे कि स्नान-गृह की सफ़ाई करने का काम अगर जरूरी है तो बस, उसे करना ही पड़ेगा। फिर वे बोले कि चतुर्भुज के हरेक शीर्ष पर चार ताकतों ने पकड़कर रखा है। ये

दिल्ली

मुरादाबाद

रुद्रपुर

भाग ४, अंक ४ जुलै २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

सतखोल

शक्तियाँ हैं–परिवार, समाज, धर्म और इच्छाएँ। हम बीच में फँसे हैं और चारों तरफ से ये ताकतें हमें खींच रहीं हैं। जैसे–जैसे हम इन बलों से दूर होते जाते हैं, वैसे–वैसे हम इन ताकतों से मुक्त होते जाते हैं। फिर वे अपने कमरे में आराम करने चले गए।

सतखोल

एक जून को गुरुदेव ने सुबह सात बजे सत्संग कराया और दस बजे सतखोल के लिए निकल गए, जहाँ वे दोपहर में पहुँचे। मौसम सुहाना और मनमोहक था। शाम को गुरुदेव अभ्यासियों के साथ बाहर खुले में बैठे और उनके प्रश्नों के जवाब दिए। उन्होनें कहा कि ये संसार आनन्द प्राप्त करने के लिए नहीं है। हमारी पाँच इन्द्रियाँ हमें सिखाने के लिए तथा हमें जानकारी देने के लिए दी गई हैं। किन्तु हम उनका उपयोग सुख प्राप्त करने के लिए करते हैं। ईश्वर ने हमें दिशा दिखाने के लिए विवेक दिया है तथा सही दिशा में चलने के लिए दृढ–निश्चय प्रदान करने वाला हृदय दिया है।

लगभग हर दिन गुरुदेव विधार्थियों के साथ बैठते, बातें करते, मजाक करते, किन्तु सबसे अधिक उन सबको छूने वाली आध्यात्मिक प्रेरणा देते। ओमेगा स्कूल के बच्चों को यादगार के रूप में एक पुस्तक तथा एक सी. डी. दी गई जिसका विषय था 'ओमेगा से–सप्रेम'। इस पुस्तक में गुरुदेव द्वारा हस्तलिखित एक संदेश भी है।

यात्रा के आखिरी दिन गुरुदेव ने विधार्थियों से कहा," दूसरों की कही बातों के आधार पर अपने विषय में निर्णय ना लो। दूसरों को अपना आईना मत बनाओ। जो मैं हूँ वह मैं हूँ और जो मुझे बनना है वह मुझे बनना है। सहज मार्ग एक यात्रा है–जैसे "हम हैं से लेकर जैसा हमें बनना है, तक"।

चार तारीख को दोपहर में गुरुदेव रुद्रपुर के लिए निकले तथा रास्ते में हल्द्वानी आश्रम में कुछ देर के लिए रुके। पाँच तारीख को सुबह गुरुदेव ने सत्संग कराया और मुरादाबाद के लिए निकले। छ तारीख को मुरादाबाद में गुरुदेव ने सुबह ध्यान कराया तथा नाश्ते के बाद दिल्ली के लिए रवाना हुये । वे १२:३० बजे दिल्ली पहुँचे जहाँ यह यात्रा समाप्त हुई।

सिंगापुर

गुरुदेव १६ जून को रात्रि में सिंगापुर पहुँचे। वे भाई नितिन गोविला के घर पर रुके। जगह के अभाव में सत्संग को दो भागों में बाँटा गया था – सुबह विदेशी अभ्यासियों के लिए तथा शाम को स्थानीय अभ्यासियों के लिए। सत्संग के बीच के समय में, अभ्यासी आपस में मिलते तथा गुरुदेव के लिए इन्तज़ार करते। अधिकतर सत्संग गुरुदेव ने स्वयं संचालित किए। रविवार १९ तारीख को गुरुदेव का स्वागत करने के लिए सभी अभ्यासी 'सिंगापुर ध्यान केन्द्र' में एकत्रित हुए। सत्संग के पश्चात गुरुदेव ने सबका सप्रेम आभिवादन किया। उन्होंने धीरे–धीरे कतार में खड़े लोगों की ओर चलते हुए कुछ लोगों से बातें की, कुछ के कन्धों को थपथपाया तथा बच्चो को विशेष रूप से आशीर्वाद दिया। उनकी उपस्थिति एक अति विशेष सौम्य प्रकाश के समान थी। यह सब चिरागों को जलाने वाले एक लाईटर के गुजरने के समान था जिसने प्रत्येक हृदय को स्पर्श करके प्रकाशित किया तथा जिसे छूकर सभी हृदय चमक उठे थे। उस दिन बाद में वे 'मरीना बे सैंड्स' देखने गए, जो आधुनिक सिंगापुर की वास्तुशिल्प की दृष्टि से देखने लायक कृति है।

सोमवार की शाम को गुरुदेव ने प्रशिक्षकों के लिए ध्यान का संचालन किया तथा वहाँ उपस्थित सभी अभ्यासियों से करीब ३० मिनिट बातचीत की।

- जब किसी ने बाबूजी महाराज से पूछा "क्या आप समृद्धि के विरुद्ध हैं?" बाबूजी महाराज ने कहा–"मैं इसके विरुद्ध नहीं हूँ। पैसा बनाना अपनी योग्यताओं का इस्तेमाल करने का सवाल है, किन्तु एक नदी के जैसे पैसे का निरन्तर बहते रहना जरूरी है यानि इसका स्थानन्तरण होते रहना चाहिये। जितनी आपकी आवश्यकता हो उतना आप लें और बाकी को आप आगे बढा दें"।
- तो सहज मार्ग का सार संतुलन के विषय में है–जीवन में गुण लाना, मूल्य लाना, चीजें संजोना नहीं, किन्तु स्वंय बनना।
- अनुशासन प्रेम से उत्पन्न होना चाहिए। सहज मार्ग की विशेषता यह है कि ध्यान के द्वारा हमारे हृदय में गुरुदेव के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है जो कि बढ़ता है और प्रेम को हमें अनुशासित करना है।
- हर पौधा अपनी गति से बढ़ता है। आप यह नहीं कह सकते कि उन सबको एक साथ बढ़ना चाहिए। केवल बाढ़ के समय पानी समान रूप से ऊपर बढ़ता है जो कि घातक होता है। प्रेम अपने आप बढ़ना चाहिए। हम किसी के ऊपर प्रेम थोप नहीं सकते।

गुरुदेव २२ तारीख को दोपहर में मलेशिया के लिए निकले गए जहाँ पर उन्हें 'मलेशिया आश्रम' तथा 'एशिया सेमिनार' का उदघाटन करना था।

ओमेगा से आए बच्चों के साथ सतखोल में

सिंगापुर

© Shri Ram Chandra Mission

२४ जुलाई उत्सव की तैयारी

सहज मार्ग में भण्डारों की रहस्यात्मकता

गुरुदेव अक्सर हमें सहज मार्ग के अपने शुरुआती दिनों की याद दिलाते हैं जब बाबूजी महाराज के शाहजहाँपुर स्थित साधारण निवास स्थान पर तीस अभ्यासी सम्मिलित होते थे। आज डायमंड जुबिली पार्क, तिरुप्पूर जैसे स्थान पर आयोजित होने वाले भंडारों मे सम्मिलित अभ्यासियों की संख्या पचास हजार तक पहुँच गई हैं। यह हमारे गुरुदेव द्वारा किये गये विशाल आध्यात्मिक कार्य का संकेत है जो अब स्पष्ट रूप से प्रकट होने लगा है।

गुरुदेव ने २४ जुलाई २००६ को दी गई अपनी वार्ता में हमे भंडारों के आध्यात्मिक उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए निम्नलिखित चीजें कहीं।

- इनका आशय त्यौहार जैसा नहीं है, यद्यपि यहाँ भी ये आध्यात्मिक उत्सव का माहौल रहता है। यह मनोरंजन के लिये नही हैं, हमें इन अवसरों का उपयोग पूर्ण रूप से गुरुदेव के सतत स्मरण में रहते हुए अपने आध्यात्मिक विकास के लिये करना चाहिये।

- इस उद्देश्य से इस लक्ष्य से, इस अभिप्राय से विचलित होने का अर्थ है, अवांछित भटकाव वाले गैर जरूरी कार्यों में लिप्त रहकर अपने समय व संसाधनो को नष्ट करना। मैं भी समोसा पसंद करता हूँ, परंतु हमें केंटीन में भीड़ नहीं लगानी चाहिए उस समय जब पंडाल में व्याख्यान चल रहे हों, क्योंकि हमें डर है कि केंन्टीन में समोसे समाप्त न हो जाये।

- आप ध्यान कर रहे हैं या वार्ता सुन रहे हैं, जब आप उत्तम प्रशंसनीय संगीत को सुन रहे हैं, जो आपके भाई–बहनों द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है, तन्मय एकाग्रता की आवश्यकता है। उस समय हमारी आत्मा को नृत्य करना चाहिए न कि हमारे शरीर को।

- भजन का आशय है हमारे हृदय के अंदर प्रेम एवं निष्ठा की भावनाओं को जाग्रत करना; और जब हम तन्मय एकाग्रता में बैठें तब ईश्वरीय कृपा को अपनी तरफ खींचने की क्षमता विकसित करना हैं।

- एक अन्य संदेश में बाबूजी महाराज ने कहा है कि जहाँ हर्ष नहीं हैं वहाँ आध्यात्मिकता नहीं हैं। परंतु हर्ष कोई दिखावा नहीं है, वरन यह हृदय में होना चाहिए, आंतरिक हर्ष,भावनाओं का आंतरिक उबाल जो हमें अज्ञात अनदेखी दुनिया में ले जाय, जिसे हम ब्राईटर वर्ल्ड कहते हैं, यद्धपि यह अस्थाई हो सकता है।

- मैं आपको सुझाव देना चाहता हूँ कि आप इन शुभ अवसरों का सदुपयोग करें, न सिर्फ बुद्धिमत्ता पूर्ण, परंतु आपकी आत्मा, आपके शरीर, आपके मष्तिश्क सभी कुछ मिलाकर अपने गुरूदेव पर केन्द्रित करना है। जो हमें इस अस्तित्व से निकालकर एक दूसरे अस्तित्व में ले जा रहे हैं जिसका हम वर्णन नहीं कर सकते, परंतु हम ध्यान के दौरान प्रत्येक सिटिंग में उसका अनुभव कर सकते हैं, यदि हम उसे पाने पर तुले हुए हों।

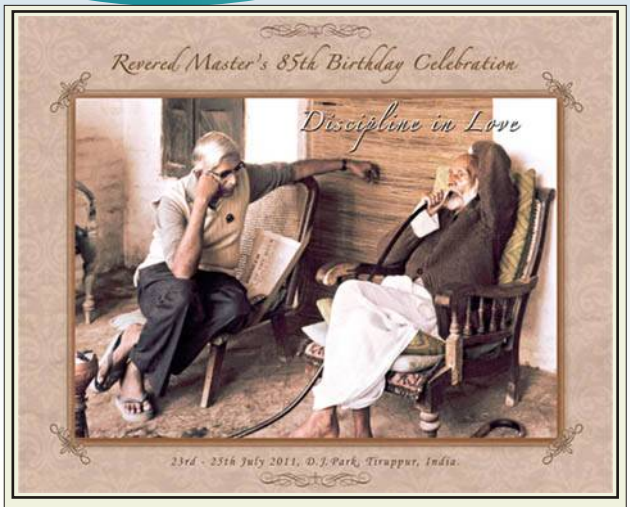

डायमंड जुबली पार्क में गुरुदेव के जन्म दिवस उत्सव की तैयारी का कार्य पूरे जोरो से चल रहा है। ध्यान कक्ष, आभ्यासियों के रहने के लिए आवासीय तंबू, केंटीन स्थल को व्यवस्थित करना एवं अन्य सुविधाओं को निर्धारित करने का कार्य प्रगति पर है। जल एक दुर्लभ संसाधान है अत: इसके लिये योजना हमेशा ही एक चुनौती रहती है। पानी जमा करने व विभिन्न स्थलों पर पहचाँने वाले पाईप लाईन व नलों तथा शौचालय घरों की जाँच पडताल चल रही है, स्नानघर में सुधार का कार्य भी गति पर है। पूरे उत्सव स्थल पर विद्युत एवं वैकल्पिक समर्थन ऊर्जा व्यवस्था की भी योजना बनाई गई है। उत्सव स्थल पर स्वयं सेवक अभ्यासी अपनी सहभागिता से प्रसन्न है परंतु थोडे चिंतित भी है, कि जब गुरुदेव और हम सब भंडारा के लिए एकत्रित होंगे, तब तक पूरा स्थल सुव्यवस्थित कैसे होगा। हम सभी को अपने आपको भंडारे में सम्मलित होने के लिये तैयार कर लेना चाहिए तथा इस भंडारे के प्रसंग विषय "प्यार में अनुशासन" पर हमे आत्मावलोकन करना चाहिए।

बाबूजी महाराज

"यह हमारे मिशन का विशेष दिन, गुरुदेव का जन्म दिवस, पूरे सम्मान एवं प्यार से मनाया जाना चाहिए। हमारे अभ्यासियों में से प्रत्येक को यह आवश्य महसूस करना चाहिये कि वह कितना भाग्यशाली है जो इस जीवन में उसे ऐसे दिव्य मार्गदर्शक मिले हैं जो उसे उसके उच्चतम भविष्य की ओर ले जा सकते हैं। साधना की प्रक्रिया मे यह विशेष समय है, अभ्यासी के लिये यह एक ऐसा अवसर है जब वह अपने हृदय से सारी कृतज्ञता व्यक्त एवं प्रदर्शित कर सकते हैं।"

शुक्रवार,अप्रैल ३०,२००४–१०
व्हिस्पर फ्राम द ब्राइटर वर्ल्ड

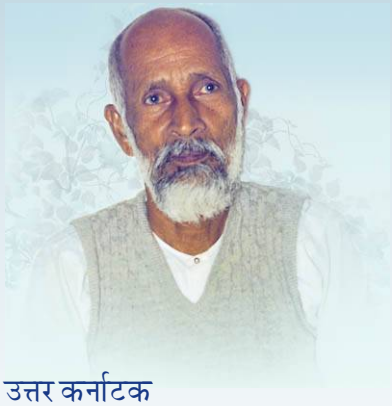

पूज्य बाबूजी महाराज का ११२ वां जन्म दिवस समारोह

हमारे पूज्य बाबूजी महाराज का ११२ वां जन्म दिवस समस्त भारत में कृतज्ञता और समर्पण के साथ मनाया गया। प्रस्तुत है एक विवरण रिपोर्ट:

उत्तर कर्नाटक

गुलबर्गा आश्रम में लगभग ३०० अभ्यासी गुलबर्गा, सेडम, चित्तापुर, शोरापुर और हमनाबाद से आए थे। बाबूजी के जीवन पर आधारित एक वीडियो , "उनके साथ" नामक शीर्षक की एक ऑडियो सी. डी., बाबूजी के साथ अनुभवों पर एक वार्ता और प्रश्न प्रतियोगिता तथा गुरुदेव की वार्ताओं की एक वीडियो, ये सभी कार्यक्रमों का हिस्सा थे। इस दिन सभी अभ्यासी दिव्य कृपा में डूबे हुए थे।

हुबली आश्रम में लगभग २५० अभ्यासी धारवाड़, बेलूर, गडग, पुदकलकत्ती, सिरसी, कुकनूर, रानेबेन्नूर और कल्लूर से आकर एकत्रित हुए और सुबह के सत्संग मे लीन हो गये। नाश्ते के बाद 'समय में यात्रा' नामक वीडियो दिखायी गयी। युवा वर्ग द्वारा बाबूजी के जीवन पर आधारित एक नाटक प्रस्तुत किया गया जिसमें बाबूजी और हमारे गुरुदेव के जीवन से लिए गए कुछ किस्सों को जीवन्त दर्शाया गया और साथ ही 'तत्व का चेहरा' नामक बाबूजी के चित्रों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गयी। दोपहर के सत्र में एक प्रश्न प्रतियोगिता और बच्चों का कार्यक्रम आयोजित किये गये और इस सत्र का समापन शाम के सत्संग के साथ हुआ। यहा का वातावण भंडारे के समान था।

बिदर आश्रम में मनाये गये उत्सव में भालकी, चांगलर, और थाना कुशनूर से आए लगभग १२७ अभ्यासी सम्मिलित हुए। कार्यक्रम बाबूजी के जीवन और उनके द्वारा दी गयी शिक्षा पर केन्द्रित था। कार्यक्रम के दौरान भाई हरीलाल चव्हाण ने वार्ता प्रस्तुत की और भाई पंडरीनाथ ने बाबूजी द्वारा दी गयी शिक्षा और उनके अनमोल वचनों पर आधारित एक प्रश्न प्रतियोगिता आयोजित की।

दक्षिण कर्नाटक

बनशंकरी आश्रम, बंगलौर में चार वक्ताओं भाई (डॉक्टर) पेरुमाल, बहन वसंत कुमारी, भाई बी.जी. सुब्रामण्य, और बहन माधुरी ने बाबूजी को प्रभावशाली ढंग से श्रद्धाँजलि अर्पित की। कार्यक्रमों के अन्तर्गत बाबूजी के जीवन तथा उनके द्वारा दी गयी शिक्षाओं पर आधारित विषयों को सम्मिलित किया गया। एक वक्ता ने भौतिक जीवन के शिक्षक और आध्यात्मिक शिक्षक, जो कि हर क्षण अपने शिष्यों का एक माँ की तरह ध्यान रखता है, की कार्यप्रणाली की भिन्नता के विषय में बताया। भाई श्रीनिवास और भाई सुब्रामण्य द्वारा आयोजित एक प्रश्न प्रतियोगिता ने अभ्यासियों में उत्सुकता बढ़ाने के साथ-साथ उनका मार्ग-दर्शन भी किया। दोपहर में बाबूजी का एक वीडियो दिखाया गया। उत्सव का समापन शाम के सत्संग के साथ हुआ।

कोलेगाल

लखनऊ

कोलेगाल में आयोजित समारोह मे लगभग ४१ अभ्यासियों ने भाग लिया जिसमे टी. नरसीपुरा के अभ्यासी भी सम्मिलित हुए। इस अवसर पर भाई मधुसूदन, भाई महादेव गौडा, बहन अनुमेलम्मा, बहन धनलक्ष्मी, भाई शिवकुमार और भाई महादेवस्वामी ने वार्ता प्रस्तुत की। उत्सव के दौरान अभ्यासियों ने दिव्यता के साथ एकरुपता को महसूस की ।

गुलबर्गा

हुबली

दुर्गापुर

पश्चिम बंगाल

कार्यक्रम का आरम्भ २९ अप्रैल को शाम के सत्संग से हुआ। अगले दिन कोलकत्ता, बर्दवान, पनागढ़, रानीगंज, आसनसोल, बर्नपुर, काजोरा, सियूरी, अन्डाल, चित्तरंजन और बकुरा केन्द्रों से आकर लगभग ८० अभ्यासी और बच्चे दुर्गापुर में एकत्रित हुए। भाई यू.एस. मिश्रा, बहन कुसुम मेहरा और भाई परिमल ने वार्ता प्रस्तुत की तथा उसके बाद एक वीडियो दिखाया गया। दोपहर को एक प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया जिसमें अभ्यासियों के संदेहों को वक्ताओं द्वारा दूर किया गया। इसके पश्चात शाम का सत्संग हुआ। उत्सव का समापन १ मई को प्रातः सत्संग के साथ हुआ। अभ्यासी इस समूह के अध्यात्मिक वातावरण में खोए हुए थे।

उत्तर प्रदेश

लखनऊ में पूरे दिन के कार्यक्रम में ४२८ अभ्यासियों ने भाग लिया। इस दौरान बाबूजी के जीवन पर आधारित एक वीडियो दिखाया गया, वार्ताएं प्रस्तुत की गयी और भजन गाए गये। युवाओं और बच्चों ने आध्यात्मिक शिक्षाओं पर आधारित कार्याक्रम प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का समापन शाम को ५ बजकर ३० मिनट पर सत्संग के साथ हुआ।

भाग ४, अंक ४ जुलै २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

चिनरवल्लिकुलम

जबलपुर

जबलपुर, मध्य प्रदेश

उत्सव का आरम्भ २९ अप्रैल को सायं सत्संग से हुआ जिसमें ३५० अभ्यासी सम्मिलित हुए। इस उत्सव का शीर्षक था 'प्यार में अनुशासन'। अपनी वार्ता में ज़ोनल प्रभारी भाई विकल्प ने बताया कि जब हम आध्यात्मिकता में प्रवेश करते हैं तो किस तरह हम गुरुदेव के साथ एक रिश्ते में बंधते हैं और किस तरह हमारे हृदय में उनके लिए प्यार उत्पन्न होता है और किस तरह हृदय परिवर्तन में गुरुदेव का सहयोग मिलता है। बहन दीपा भारद्वाज ने "प्रेमी की विशेषताएं" शीर्षक पर एक वार्ता प्रस्तुत की जिसमे उन्होंने 'नियोजित दीवानगी' के विषय मे समझाया।

डॉ. आर.के. श्रीवास्तव ने अपनी वार्ता में समझाया कि कैसे एक सच्चा प्रेमी स्वतः ही अनुशासित हो जाता है और साथ ही बहन सुनीता शुक्ला ने व्याख्या दी कि कैसे प्रेम और अनुशासन साथ–साथ चलते हैं। एक प्रश्न पहेली, दस उसूलों पर आधारित एक नाटक तथा कुछ भजनों के द्वारा अभ्यासियों ने दिव्यता को महसूस किया और उसमें लीन हो गए। बाबूजी के जीवन पर एक वीडियो दिखायी गयी और उसके बाद बच्चों ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उत्सव का समापन रविवार को भाई विकल्प की एक वार्ता से हुआ जिसमें उन्होंने आश्रम की सम्पत्तियों को सुरक्षित रखने की आवश्यकता पर बल दिया जिससे कि उन्हें भविष्य मे आने वाली पीढ़ियों को सौंपा जा सके।

दक्षिण तमिलनाडु

मदुरै में हुए उत्सव मे पास के १३ केन्द्रों से आए लगभग ५०० अभ्यासी सम्मिलित हुए। उत्सव का शीर्षक था " सत्य का उदय"। मदुरै, शोळवंदान, तेनी, बत्तलगुन्डु और कारयकुडी केन्द्रों के अभ्यासियों ने पुस्तक के कुछ अध्यायों की व्याख्या की। दोपहर के खाने के पश्चात मेलूर, सिन्नमपुनेरी, परमक्कुडी, रामनाथपुरम, मानामदुरई, मदुरै और सिवगन्गाई केन्द्रों के अभ्यासियों ने पुस्तक के शेष विषयों को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन भाई पलनियप्पन, भाई नागराजन, और भाई राधाकृष्णन ने किया। अभ्यासियों ने दिव्य वातावरण में बाबूजी की याद का आनन्द लिया और उनकी रचनाओं की अधिक जानकारी प्राप्त की। विरुदुनगर, चिन्नवल्लिकुलम, अरुपुकोट्टयी, करियपट्टी, कोविलपट्टी, और शिवकाशी केन्द्रों से लगभग ३० अभ्यासी चिन्नवल्लिकुलम आश्रम में एकत्रित हुए। सुबह के सत्संग के पश्चात भाई स्वामीनाथन ने बाबूजी के जीवन इतिहास पर एक लेख पढ़ा। अभ्यासियों ने साधना, चरित्र निर्माण, आज्ञाकरिता, स्वीकार करना, और समर्पण जैसे विषयों पर विचार विमर्श किया। एक महत्वपूर्ण विषय पर विचार विमर्श हुआ कि किस तरह मिशन के कार्य को अपना कार्य समझने की भावना को विकसित किया जाए। दोपहर के सत्र में प्रेम के विषय में सामूहिक वार्तालाप आयोजित किया गया। सम्पूर्ण दिन का कार्यक्रम शाम के सत्संग के साथ समाप्त हुआ।

अहमदाबाद

आनन्द

गुजरात

लगभग ८३ अभ्यासी उत्सव मनाने के लिए आनन्द, गुजरात में एकत्रित हुए। सत्संग के पश्चात "प्यार का सागर" नामक वीडियो दिखाया गया। उस दौरान सभी उपस्थित अभ्यासियों को ऐसा लगा जैसे कि वे बाबूजी के समय में पहुँच गये हों। नाश्ते के पश्चात सभी अभ्यासियों को एक संक्षिप्त कहानी दी गयी जिसमें बहुमूल्य संदेशों को प्रस्तुत किया गया था। अभ्यासियों ने उस कहानी का सारांश और इस विषय में अपने विचारों को प्रस्तुत किया। दोपहर के समय एक सामूहिक वार्तालाप का आयोजन किया गया जिसमें ध्यान, सफाई, प्रार्थना, सतत् स्मरण और एक गुरु की आवश्यकता जैसे विषयों पर चर्चा की गयी। शाम के सत्संग के पश्चात भजन गाए गए।

गुजरात के ज़ोन ६ए से लगभग ९०० अभ्यासियों ने अहमदाबाद में हुए उत्सव में भाग लिया। वहाँ पर सामूहिक वार्तालाप हुए, नाटिका प्रस्तुतीकरण हुआ और गुरुदेव की प्रदर्शनी हुई। वातावरण की देख़भाल के विषय में जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से आश्रम में कुछ पेड़ लगाए गए। रविवार को नए अभ्यासियों के लिये एक अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके पश्चात वक्ताओं के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जोकि इस कार्यक्रम को दूर दराज़ के केन्द्रों तथा उनके नज़दीकी उपकेन्द्रों तक ले जाएंगे।

भाग ४, अंक ४ जुलै २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

युवाओं के लिये कार्यक्रम

युवा विकास शिविर, इन्दौर, एम. प्र.

१७ वर्ष से ज्यादा उम्र के युवाओं के लिये ४ और ५ जून को इन्दौर में दो दिन का आवासीय शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर का उद्देश्य उनके व्यवहार कौशल को विकसित करना और उनके आध्यात्मिक और भौतिक विकास में संतुलन स्थापित करना था।

सानवेर, भोपाल, सोहागपुर, देवास, रतलाम, विदिशा और इन्दौर से अभ्यासी वहाँ आये थे। उन्हें चार समूहों में विभाजित किया गया। पहिले वार्तालाप कुशलता पर एक सत्र हुआ और उसके बाद साहस बढ़ाना, मुश्किलों को हल करने में दृढ़ता, सृजनात्मकता बढ़ाना और सोच के दायरे को विकसित करना, जैसे विषयों पर एक सत्र आयोजित किया गया। शाम के समय एक चलचित्र 'द सीक्रेट' दिखाया गया।

अगले दिन रविवार को सुबह सत्संग के बाद उन्होंने एक मनोरंजक सत्र क्षमता निर्माण विषय पर किया, जिसमें संगठित प्रयत्न और समय प्रबन्धन पर खेल आयोजित किये गये। एक परिचर्चात्मक सत्र साक्षात्कार कौशल और सामूहिक वार्तालाप पर भी हुआ। भाई विकल्प मुंद्रा और भाई श्रेयसकर चौधरी ने समापन सत्र का संचालन किया। दो युवा उद्योगपतियों ने, जोकि बड़े पैमाने पर दैनिक आधार पर कर्मचारियों का प्रबन्धन करते हैं, अपने अनुभव बताते हुये वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जुड़े प्रश्नों के उत्तर दिये। सभी प्रतिभागियों के लिये यह कार्यक्रम बहुत ही व्यावहारिक, उपयोगी, और ज्ञानवर्धक था।

ज़ोनल युवा गोष्ठी, बड़ौदा, गुजरात

बड़ौदा केन्द्र पर ११ एवं १२ जून को पहली बार ऐसा कार्यक्रम आयोजित किया गया। विभिन्न केन्द्रों से आये लगभग ७५ युवाओं ने इसमें भाग लिया। सुबह के सत्र में साधना के विभिन्न पहलुओं और चरित्र निर्माण पर सामूहिक चर्चा के बाद प्रतिभागियों की प्रस्तुति और प्रश्न–उत्तर का सत्र हुआ। दोपहर के सत्र में दस नियमों पर आधारित एक नाटिका की तैयारी और प्रस्तुति थी। शाम के समय खुले मैदान में खेल–क्रीडा आयोजित की गयी और रात के खाने के बाद अभ्यासियों ने गीत, भजन और चुटकले सुनाये। भाई कमलेश पटेल ने एक वार्ता दी कि हम कैसे अपनी साधना को प्रभावोत्पादक बना सकते हैं। उसके बाद एक परिचर्चात्मक सत्र हुआ जोकि प्रतिभागियों के लिये बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ। उनसे अगली गोष्ठी का विषय बताने के लिये कहा गया, और उसके बाद 'इच्छाशक्ति और अनुशासन' विषय को अक्टूबर में प्रस्तावित अगली गोष्ठी के लिये चुन लिया गया।

युवाओं के लिये रविवार का कार्यक्रम, दोमलगुड़ा, आन्ध्र प्रदेश

जनवरी २०११ से दोमलगुड़ा और एस आर नगर आश्रम में सुबह ९:३० से ११:३० बजे तक प्रत्येक रविवार को युवाओं के लिये कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं और लगभग २०–२५ युवा अभ्यासी इनमें भाग लेते हैं। इस तरह के कार्यक्रमों का उद्देश्य युवाओं में आपसी मेलजोल बढ़ाना और साधना और मिशन के बारे ज़्यादा जानकारी हासिल करना है। ये कार्यक्रम विभिन्न विषयों जैसे, चरित्र निर्माण, डायरी लिखना, मनोरंजक खेल, सहज मार्ग के साहित्य में से शब्द पहेली, भूमिका निभाना, कहानी सुनाना, मौन शब्द पहेली, प्रशिक्षकों के साथ प्रश्न–उत्तर सत्र आदि पर आयोजित किये जाते हैं। इन कार्यक्रमों के द्वारा युवाओं में सहज मार्ग के मूल्यों का विकास और उनके चरित्र निर्माण का प्रयास किया जा रहा है।

आवासीय शिविर, इन्दौर

२१ और २२ मई को इन्दौर में किशोरों के लिये एक शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्देश्य भावी अभ्यासियों के साथ घनिष्ठता बढ़ाना था। किशोरों ने अपना परिचय सृजनात्मक ढंग से एक स्मृति खेल के द्वारा दिया। उन्हें पाँच दलो में विभाजित कर दिया गया। इसके बाद उन्होंने विभिन्न गतिविधियों जैसे गाँठ बाँधना, चादर के उपर खड़े होकर उसे तह करना और पारम्परिक' मटकी फोड़' प्रतियोगिता में भाग लिया। भाई सुनील खन्ना और बहन यामिनी करमारकर ने 'अपने को पहचानना' और 'लक्ष्य निर्धारण' विषयों पर सत्र आयोजित किये। शाम के समय बच्चों को पास के क्षेत्रीय उद्यान में ले जाया गया। कुछ बहनों के निरीक्षण में बच्चों ने स्वादिष्ट पाव भाजी भी बनायी।

अगले दिन वे एस. आर. सी. एम. के नये आश्रम स्थल पर गये। वहाँ पर उनके लिये विभिन्न परम्परागत भारतीय खेलों का सामान रखा गया था। अगले दो घंटे उन्होंने पतंग उड़ाने, सतोलिया और गिल्ली डन्डा खेलने में बिताये। इसके बाद एक पत्र' लैटर फ्रॉम माई हार्ट' पर एक भावपूर्ण सत्र हुआ। बहन शशि शर्मा और भाई राजेश रावेरकर ने यह पत्र पढ़ा। यह पत्र एक माँ ने अपने बच्चे को उसकी कुशलता के लिये अपनी चिंता दर्शाते हुये लिखा है। इसकी प्रतिक्रिया में प्रत्येक बच्चे ने अपना प्रेम और कृतज्ञता दर्शाते हुये अपनी माँ को पत्र लिखा। इसका उद्देश्य उन्हें जीवन में माता–पिता के महत्व को समझाना था। सत्र का समापन ' ईश्वर और मैं' कार्यक्रम के साथ हुआ।

बड़ौदा

आवासीय शिविर, इन्दौर

भाग ४, अंक ४ जुलै २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

बच्चों के लिये ग्रीष्मकालीन शिविर

बाबूजी मैमोरियल आश्रम, चेन्नई

७ से १३ वर्ष की आयु के लगभग ७० बच्चों के लिये ६ से ८ मई के बीच एक शिविर आयोजित किया गया। शिविर का आरम्भ परिचय देने के साथ हुआ और उसके बाद कारीगरी की गतिविधियाँ रखी गयी। तीन दिनों के कार्यक्रम में विभिन्न क्रियाकलाप जैसे शारीरिक व्यायाम, मालिक के लिये गीत, आपसी वार्तालाप सत्र, आश्रम का नक्शा बनाना, समूह भावना को बढ़ाने वाले खेल, एक नाटिका 'प्रेम सबको जीत सकता है', कपड़े के थैलों पर चित्रकारी, जीवन के वास्तविक धन को खोजने के लिये 'खजाने की खोज' गतिविधि और प्रश्न पहेली आदि शामिल किये गये। भगवान कृष्ण पर आधारित एक चलचित्र भी दिखाया गया। सत्र के समापन में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके बाद सभी बच्चों को नये मित्र के रुप में एक गुलाब का पौधा दिया गया और कार्यक्रम की सी.डी. दी गयी। कार्यक्रम के अन्त में बच्चों और माता–पिता से बातचीत के दौरान कार्यक्रम के बारे में उनकी राय जानी गयी।

चेन्नई

वेल्लौर, तमिलनाडु

वेल्लौर आश्रम में २८ मई को ३ से १५ वर्ष के लगभग ५० बच्चों के लिये एक दिन का शिविर आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न केन्द्रों से आये बच्चों में आपसी मेलजोल बढ़ाना और नैतिक मूल्यों के साथ एक अनुशासित जीवन का विकास करना था। आयु के आधार पर उनके दो दल बनाये गये। कार्यक्रम में समूह, दल और व्यक्तिगत तौर पर सृजनात्मक गतिविधियाँ शामिल थी। बच्चों ने गायन, शास्त्रीय नृत्य, योगा, आदि में व्यक्तिगत प्रदर्शन दिखाये। युवाओं ने एक नाटक 'सहज मार्ग– एक जीवन जीने का तरीका' प्रस्तुत किया। नाटक में दिखाया गया था कि कैसे एक युवक का आन्तरिक परिवर्तन और मालिक के लिये उसकी तड़प, उसके परिवार के वातावरण और मित्रों में परिवर्तन लाता है।

वेल्लौर

हैदराबाद

हैदराबाद में ६ से ८ मई तक तीन दिन का सहज शिविर आयोजित किया गया। इसमें लगभग ९० बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर का आरम्भ परिचय देने और नये मित्र बनाने के साथ हुआ। अनेक विषयों जैसे माता–पिता के लिये हमारा प्रेम, प्यार में अनुशासन, आदि पर आधारित क्रियाकलापों में भाग लेने के लिये उनके दल बनाये गये। 'दूसरा आयाम' नामक खेल में बच्चों को चित्र का एक भाग दिखाकर उन्हें चित्र पहचानने के लिये कहा गया। उसके बाद एक घंटे के लिये खुले मैदान में खेल–क्रीडा का प्रबन्ध था। दूसरे दिन 'माता–पिता और मित्र' कार्यक्रम का उद्देश्य उनको यह अहसास करवाना था कि वे अपने माता–पिता के बारे में कितना जानते हैं। वरिष्ठ समूह ने भाई अनन्त के साथ एक वार्तालाप सत्र किया, जिसका विषय था, 'एक अभ्यासी बनने की तैयारी और स्पष्टीकरण'। भाई श्रीनिवास ने 'ध्यान कैसे मानवता की भावना पैदा करता है' विषय की व्याख्या दी। बच्चों को 'मेरे गुरूदेव' किताब की प्रति पढ़ने के लिए दी गयी और उसके बाद बहन रुचिता की नृत्य प्रस्तुति के साथ शिविर का समापन हुआ।

हैदराबाद

रायचूर

बहन जी. लक्ष्मी और बहन नागवेनी ने १४ से १६ अप्रैल के बीच तीन दिन का शिविर आयोजित किया , इसमें लगभग ४५ विद्यार्थिओं ने भाग लिया। बच्चों को सरल उदाहरणों और कहानियों के द्वारा 'ईश्वर और मालिक' , 'स्वस्थ जीवन' और 'अनुशासन' जैसे विषयों को समझाया गया। दोपहर के समय इन विषयों पर कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। अन्तिम दिन डॉ. बालसुबह्मण्यम और बहन अन्नापूर्णा ने विद्यार्थियों को स्वस्थ खान–पान की आदतें और शिष्टाचार के बारे में बताया जोकि उन्हें स्वस्थ जीवन जीने में सहायता प्रदान करेगें। १७ अप्रैल को रविवार के सतसंग के पश्चात विद्यार्थियों के माता–पिताओं को आमन्त्रित किया गया और उन्हें इन कार्यक्रमों के उद्देश्य के बारे में बताया गया। उन्हें मालिक, मिशन और पद्धति के विषय में भी बताया गया। बच्चों ने कार्यशाला में अपने अनुभव के बारे में बताया। कार्यक्रम के दौरान मिशन की किताबें बिक्री के लिये रखी गयी और माता–पिताओं को सूचना पत्र बाँटे गए। उपस्थित अतिथियों में से कुछ ने साधना आरम्भ करने में रुचि दिखायी।

रायचूर

भुज, गुजरात

२३ से २८ मई तक भुज केन्द्र द्वारा ६ से १२ वर्ष की आयु के बच्चों के लिए एक शिविर का आयोजन किया गया। ७२ बच्चों को उम्र के अनुसार दो समूहों में बाँटा गया। कार्यक्रम में योग्यता प्रदर्शन और मूल्य आधारित विभिन्न गतिविधियों को सम्मिलित किया गया था। अन्तिम दिन कार्यक्रम के समापन के लिए बच्चों के माता–पिताओं को आमन्त्रित किया गया और उन्हें मिशन और पद्धति के विषय में अनौपचारिक जानकारी दी गयी। ४० से अधिक माता–पिताओं ने कार्यक्रम में भाग लिया और अपने बच्चों को प्रोत्साहित किया। इस ग्रीष्म कालीन शिविर के बारे में एक विवरण स्थानीय टेलीविजन पर प्रसारित किया गया। गुरुदेव की कृपा से और लगभग २४ स्वंय सेवकों, जिनमें बच्चे भी शामिल थे और जिन्होंने पूरी लगन से कार्य किया, की सहायता से कार्यक्रम सफल रहा।

भुज

भाग ४, अंक ४ जुलै २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

बहराईच केंद्र, यू.पी.

बहराईच, श्री राम चंद्र मिशन का एक तेजी से उभरता हुआ केंद्र है। यह केंद्र लखनऊ से १२५ कि. मि. उत्तर पूर्व की ओर नेपाल सरहद के करीब है। बहराईच उत्तर प्रदेश के दूसरे जिलों से बखूबी जुड़ा हुआ है और इस इलाके में मिशन का मुख्य केंद्र है। आश्रम का स्थल बहराईच से करीब ६ कि.मि. पर स्थित है और करीब दो एकड़ ज़मीन पर फैला है। १२ जून को आश्रम का भूमि पूजन आयोजित किया गया। इस अवसर पर करीब १०० अभ्यासियों ने गोरखपुर केंद्र के प्रशिक्षक भाई नरसिंह एवं भाई विजय शंकर सहित समारोह में भाग लिया। गोंडा केंद्र के प्रशिक्षक भाई बद्रीप्रसाद सिंह ने उनके संबोधन में कहा कि आश्रम आत्मा का घर होता है जहाँ वह अपने अस्तित्व को स्वीकारती है। लोग मंदिर अपनी लौकिक चीज़ों को प्राप्त करने के लिये जाते हैं किन्तु आश्रम में हम इस लौकिकता को खोते हैं अपनी अंतर आत्मा को जानते हैं।

सप्ताहांत कार्यक्रम, नाट्रमपल्लि, तमिलनाडु

२१ और २२ मई को, नाट्रमपल्लि आश्रम में सहज मार्ग – "जीने की रीत" पर वेल्लोर केंद्र के ५५ अभ्यसियों के लिये एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। भाई भरतराजन द्वारा औपचारिक अधिष्ठापन के पश्चात साधना के महत्व पर एक प्रस्तुतीकरण दिया गया। कार्यक्रम का विशिष्ठ भाग था गुरुदेव का एक वीडियो द्वारा सहज मार्ग की शंकाओं पर स्पष्टीकरण देना। सामूहिक चर्चा और वीडियो प्रदर्शन द्वारा सहज मार्ग अभ्यास के विभिन्न पहलुओं पर ज़ोर दिया गया। भाई बाला सुब्रामणियम ने भाईचारे और आत्मावलोकन सत्र के दौरान सहज मार्ग को अपने जीवन शैली के हर पहलू में लाने पर ज़ोर दिया।

कहानियों से सीख – के.जी.एफ, दक्षिण कर्नाटक

बैंगलूर केंद्र से प्रकाशन संयोजक एवं उनके दल द्वारा के. जी. एफ़., कोलार और मुल्बागल से करीब ३० अभ्यासियों के लिये एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। एक प्रस्तुति ने मिशन के साहित्य को पढ़ने को साधना का एक मुख्य पहलू बताया। साथ ही गुरुदेव की किताबों को ध्यान और उद्देश्य से अपनी दिनचर्या में पढ़ने की रीत बनाकर ज्ञान और सतत् स्मरण बढ़ाने के लिए उनका महत्व बताया। कार्यक्रम में अभ्यासियों ने अपनी पसन्द की भाषाओं जैसे अंग्रेज़ी, तमिल, कन्नड़ और तेलुगु में कहानियाँ पढ़ी। गुरुदेव द्वारा बताई गई कहानियों को प्रस्तुत किया गया और हर कहानी से मिली शिक्षा के बारे में विचार विमर्श किया।

संयोजकों ने आपसी चर्चा को रुचिकर एवं शिक्षाप्रद बनाया और अभ्यासियों ने प्रभावित होकर मिशन का साहित्य खरीदकर उत्साह दिखाया।

विश्व पर्यावरण दिवस, जामनगर

५ जून को, जामनगर केंद्र में विश्व पर्यावरण दिवस, स्वयं सेवकों एवं बच्चों ने शरीक होकर उत्साहपूर्वक मनाया। भाई सचिन व्यास ने स्वागत संबोधन से कार्यक्रम शुरू किया और इसके पश्चात चिड़िया के घोंसले बनाने की तैय्यारी की। भाई अर्पित देवमूर्ति, पक्षीविग्यानी, ने चिड़िया के घोंसले का उपयोग, पक्षियों को खिलाने की रीति, पेड़–पौधे उगाने के तरीकों के बारे में समझाया। सारे बच्चों को लकड़ी का चिड़िया घोसला, चिड़िया का खाना, खाना खिलाने का फीडर एवं लता का पौधा तोहफ़े में दिया गया और सिखाया गया कि कैसे ज़्यादा पक्षियों को शहरी इलाके में आकर्षित करें और पर्यावरण की देख़भाल करें।

हृदय से हृदय, रायपुर, छत्तीसगढ़

२४ अप्रैल को, रविवार के सत्संग के बाद, रायपुर के योगाश्रम में "हृदय से हृदय" कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें ३७ अभ्यासी बहनों ने भाग लिया। उनको आठ दलों में बाँटा गया और हर दल को एक विषय दिया गया। बहनों ने कर्मठता पूर्वक अपने दिये गये विषय पर सुविचार किया और दल के नेता ने संक्षिप्त टिप्पणी दी। अंग्रेज़ी में "सिस्टर" शब्द के हर अक्षर का खूबसूरत शब्दों से वर्णन किया और बहनों ने मिलकर कहा कि वे सहज मार्ग के दस नियमों का पालन करने की कोशिश करेंगी ताकि उनके लौकिक और आध्यात्मिक जीवन में संयम आये। वे ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को इस मार्ग का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं। उनकी सोच आशावादी हो गयी है, वे ज़िंदगी की कठिनाईयों का डट कर सामना कर पा रही हैं। और काफ़ी बहनों को यकीन है कि उनके बच्चों के बर्ताव में भी बदलाव आया है। बच्चों ने भी अपनी पढ़ाई को गंभीरता से लेना शुरू किया है, गुरुदेव को प्यार करते है और आश्रम के कार्यकलापों में भी सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं। बच्चे गर्व महसूस करते हैं कि उनके माता–पिता सहज मार्ग से जुड़े है और व्यग्रता से अट्ठारह साल के होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं ताकि वे भी अभ्यास शुरू कर सकें। इसके अलावा कुछ बहनों ने कविताओं द्वारा अपनी भावनाओं को प्रकट किया। कुछ ने गुरुदेव के साथ अपने संसर्ग का उदाहरण दिया। एक बहन ने बताया कि कैसे गुरुदेव के प्रति निष्ठा से उसने लाइलाज बीमारी पर विजय प्राप्त की। अंततः पिघलते हृदयों और नम आँखों से बहनों ने गुरुदेव को याद किया और प्रशिक्षक बहन रजनी दत्ता को, अपनी भावनाओं को ऐसे प्रांगण में व्यक्त करने का मौका प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया। हृदय से हृदय कार्यक्रम एक नवीकृत प्यार और भक्ति के भाव के साथ समाप्त हुआ।

प्रकाश केंद्र

मदुरै आश्रम

सन् १९७५ में तेप्पकुलम में, भाई तस्मास्वामी के निवास से श्री राम चंद्र मिशन की छोटी शुरुआत हुई थी। इस केन्द्र को बाबूजी महाराज की दिव्य उपस्थिति में उनका ७८ वां जन्मदिन मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। लगभग ८०० अभ्यासियों ने इस उत्सव मे भाग लिया था और इस अवसर पर अंग्रेजी और तमिल भाषा में स्मारिका भी प्रकाशित हुई थी।

११ और १२ अप्रैल १९९२ में मदुरै केंद्र ने रजत जयंती मनाई थी। इस अवसर पर गुरुदेव ने कहा था "वे जिन्होंने आध्यात्मिकता में पदार्पण किया है उनके लिये ध्यान एक घंटे का कर्तव्य नही हो सकता। ध्यान लक्ष्य को प्राप्त करने का एकनिष्ठ कर्तव्य है। हमारी सांस्कृतिक विरासत मे ध्यान की एक स्थायी विशिष्ठता होनी चाहिये"। इन उत्सवों के बाद केंद्र मारिअम्मन तेप्पकुलम वेस्ट बैंक, डॉक्टर गोकुलनाथ प्रेमचंद के घर स्थानान्तरित किया गया।

मदुरै आश्रम क प्रारंभ

मदुरै केंद्र के अभ्यासी भाईयो ने मदुरै रेल्वे स्टेशन एवं बस अड्डे से ११ कि.मी. दूर सुन्दरराजनपट्टी, अलगरकोइल रोड मदुरै में आश्रम के निर्माण स्थल के लिये योगदान देने की योजना बनाई। सन १९९२–१९९४ के आस–पास लगभग २.८७ ऐकड़ कि जमीन आश्रम के लिये तथा शेष जगह अभ्यासी दान दाताओं के लिये निर्धारित कर दी गयी। गुरुदेव ने इस स्थान को "श्री राम चन्द्र पुरम" का नाम दिया। गुरुदेव की ओर से प्राप्त अनुदान से १.५ एकड़ अतिरिक्त भूमि का क्रय हुआ और कुल भूमि ४.३७ एकड़ हो गयी।

सन १९९५ मे यहाँ छप्पर के नीचे नियमित सत्संग प्रारंभ हुआ था। बाद मे एक पक्का कक्ष बनाया गया और २२ सितंबर १९९७ को गुरुदेव ने इसका उदघाटन कर "मास्टर्स चेंबर" नाम दिया। उन्होंने "साधना निलयम" ध्यान कक्ष की नीव भी रखी। १७ नवंबर २००४ को उन्होंने १०८०० वर्ग फुट के ध्यान कक्ष का उद्घाटन किया। मंच पर गुरुदेव का खुबसूरत आदमकद आकार चित्र सभी के आकर्षण का केंद्र है। यह कक्ष एक अर्ध स्थाई ढाँचा है जिसमे १५०० व्यक्ति बैठ सकते हैं। कक्ष के निर्माण का सामान मालिक द्वारा भेंट दिया गया जो बाबूजी मैमोरिअल आश्रम मणपाक्कम के पुराने शयनगृह को तोड़ने से प्राप्त हुआ था।

इन सब के अलावा शयन कक्ष, रसोई घर, भोजन कक्ष, बच्चों के कार्य–कलापों की सुविधा और अध्ययन क्षेत्र की भी व्यवस्था की गई। सन २००९ मे बच्चों के लिये आवश्यक उपकरणों के साथ खेलने का स्थान एवं पुस्तकालय की स्थापना हुई।

पिछले छः वर्षों से एस.एम.एस.एफ़ के सौजन्य से एक मुफ़्त चिकित्सा शिविर प्रत्येक माह के पहले रविवार को आश्रम में आस पास के गाँव के निवासियों के लिये अभ्यासी डॉक्टरों एवं उनके साथियों द्वारा चलाया जा रहा है।

सन १९९२ में करीब ६५ अभ्यासियों से लेकर अब हर रविवार को करीब ४५० अभ्यासीयों तक संख्या बढ़ गयी है। जब गुरुदेव आश्रम की भूमि देखने पहली बार आये थे तो बंजर ज़मीन को देखकर अपने आदेशात्मक स्वर में अभ्यासियों को सलाह दी थी कि "इसे हरा भरा बनाओ"। उनकी कृपा से आज आश्रम में हरे भरे वृक्षों का सुन्दर मनोरम दृश्य देखने को मिलता है, जिससे वातावरण ठंडा, शुद्ध एवं निर्मल रहता है।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org

© 2011 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.